

विदेशी खरपतवारों के भी औषधिय उपयोग विकसित कर लिये हैं छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सकों ने

* गेहूँसा से गंजेपन और गाजर घास से कैंसर की चिकित्सा

* 25 से अधिक विदेशी खरपतवारों का पारंपरिक उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों ने विदेशी खरपतवारों गेहूँसा, लेन्टाना, गाजर घास, जल कुंभी, इयुपेटोरियम आदि के औषधिय उपयोग विकसित कर लिये हैं। इन खरपतवारों का प्रयोग वे विभिन्न रोगों की चिकित्सा में बाहरी और आंतरिक तौर पर कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटैनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि गेहूँ की फसल के साथ उगने वाले खरपतवार गेहूँसा का प्रयोग राज्य के पारंपरिक चिकित्सक गंजेपन की चिकित्सा में कर रहे हैं। ताजे पौधों को तिल के तेल में उबालकर औषधि तेल का निर्माण किया जाता है। यह तेल बालों के लिये विशेष उपयोगी माना जाता है। ताजे पौधों के लेप का प्रयोग सूखी खुजली में बाहरी तौर पर किया जाता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक विभिन्न प्रकार की सूजन की चिकित्सा में गेहूँसा का प्रयोग आंतरिक तौर पर करने की सलाह देते हैं। वायु रोगों के लिये भी यह उपयोगी है। इसी तरह घातक जलीय खरपतवार जलकुंभी का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक सिरका के साथ घावों की चिकित्सा में करते हैं। जलकुंभी में अंदरूनी घावों को ठीक करने की अपूर्व क्षमता होती है। घेंघा जैसे रोगों की चिकित्सा में भी जलकुंभी का प्रयोग किया जा रहा है। पेशाब रुकने की बीमारी में जलकुंभी की पत्तियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक दोनों ही रूप में किया जाता है। छत्तीसगढ़ में लेन्टाना भी अधिकतर सभी भागों में पाया जाता है। इसे स्थानीय भाषा में गोटीफूल और माछी मुड़ी कहा जाता है। बिलाड़ी क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मुख रोगों की चिकित्सा में लेन्टाना की टहनियों का प्रयोग करते हैं। इन टहनियों को दातून के रूप में प्रयोग में किया जाता है। लेन्टाना की टहनियों का दातून के रूप में मुख रोगों की चिकित्सा में उपयोग उन देशों के संदर्भ साहित्यों में भी नहीं मिलता है जहाँ का यह मूल निवासी है। अन्य वनौषधियों के साथ लेन्टाना के फलों का उपयोग यकृत संबंधी रोगों की चिकित्सा में पारंपरिक चिकित्सक कर रहे हैं। मनुष्यों और पशुओं में श्वास रोग, मानसिक अवसाद और त्वचा रोग उत्पन्न करने वाली गाजर घास का प्रयोग उन पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है जो कि विभिन्न प्रकार के कैंसर की चिकित्सा में दक्षता रखते हैं। रोग की अंतिम अवस्था में गाजर घास के पौधों से तैयार काढ़े का प्रयोग किया जाता है। पशु रोगों में भी गाजर घास का प्रयोग आरंभ हो चुका है। इन खरपतवारों को उपयोग करने के पूर्व पारंपरिक चिकित्सक इन्हें विशेष वानस्पतिक घोलों से उपचारित करते हैं। गेहूँसा जैसे खरपतवारों को उन खेतों से एकत्र किया जाता है जहाँ जैविक खेती पद्धति अपनायी जा रही होती है। पंकज अवधिया ने अब तक 25 से भी अधिक विदेशी खरपतवारों के विषय में उपलब्ध पारंपरिक चिकित्सकीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया है। उनका मानना है कि विदेशी खरपतवारों के नये उपयोग एक क्रांति के प्रारंभ के समान है। पूरे देश में इन विदेशी खरपतवारों ने आतंक मचा रखा है। प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों के कृषि रसायन इन खरपतवारों को नष्ट करने के लिये उपयोग किये जाते हैं पर अगले वर्ष ये खरपतवार नये मजबूत रूप में सामने आ जाते हैं। इन घातक खरपतवारों के उपयोगों की दिशा में शोध न केवल रसायनों के वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम कर सकता है बल्कि किसानों को अतिरिक्त आय और अच्छा स्वास्थ्य भी प्रदान कर सकता है।